6

संसार जिसमें मसीह आया

सुसमाचार की पुस्तकों के प्रारम्भिक पाठक उस संसार से परिचित थे, जिसमें यीशु आया था, परन्तु इसके बावजूद हम में से अधिकतर उसके बारे में कुछ नहीं जानते हैं। मसीह के समय पलिश्तीन देश के सम्बन्ध में, बी.एस.डीन ने अवलोकन किया है कि ''प्राकृतिक दृश्य वैसा ही है जैसा शकेम में अब्राहम के पहली बार तम्बू गाड़ने के समय था,'' परन्तु ''बाकी सब कुछ बदल चुका है।'' पुराने नियम के समय से होने वाले परिवर्तनों में यह भी शामिल है कि आराधनालय (synagogues) धार्मिक क्रिया गतिविधियों के मुख्य आकर्षण बन चुके थे। उस समय फरीसियों और सदूकियों जैसे धार्मिक गुटों का बहुत प्रभाव था। देश पर रोम का शासन था। वे सारे परिवर्तन कैसे आए?

नये व पुराने नियमों में अंतराल

अधिकतर परिवर्तन पुराने और नये नियम के बीच के वर्षों में ही हुए थे।

पुराने नियम के अन्त में, अधिकतर यहूदी बाबुल की दासता से अभी-अभी कनान में लौटे थे[1] और फारसी शासन के अधीन थे। पुराने नियम की अन्तिम ऐतिहासिक पुस्तक नहेमाय्याह और पुराने नियम की भविष्यवाणी की अन्तिम पुस्तक मलाकी थी। यहूदी लोग परमेश्वर के मसीहा और उसका मार्ग तैयार करने वाले दूत की राह देख रहे थे। मलाकी ने लिखा था:

> देखो, मैं अपने दूत को भेजता हूं, और वह मार्ग को मेरे आगे सुधारेगा, और प्रभु, जिसे तुम ढूंढ़ते हो, वह अचानक अपने मन्दिर में आ जाएगा; हां वाचा का वह दूत, जिसे तुम चाहते हो, सुनो, वह आता है सेनाओं के यहोवा का यही वचन है (मलाकी 3:1; 4:5, 6 भी देखें)।

खामोशी

मलाकी और सुसमाचार की पुस्तकों की घटनाओं के बीच लगभग चार सौ साल की[2] खामोशी थी। ''खामोशी'' से मेरा मतलब भविष्यवाणी का न होना है। उस दौरान परमेश्वर ने

आत्मा की प्रेरणा पाए हुए विशेष दूत नहीं भेजे। इस्राएलियों की अगुआई लिखित व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं के द्वारा होती थी (मत्ती 11:13; लूका 16:16; लूका 24:44 भी देखें)।

परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजने से पहले कई सदियों का विराम क्यों लगा दिया? इस बारे में एफ़. लेगर्ड स्मिथ ने कई सम्भावनाएं जताई हैं:[3] (1) शायद परमेश्वर मनुष्य जाति के इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण घटना को नाटकीय ढंग से पेश करना चाहता था। आखिर, यीशु के आने के समय तक, एक से एक बढ़कर कई अनुमान लगाए जा रहे थे। (2) शायद परमेश्वर मसीहा से जुड़ी भविष्यवाणियों के पूरा होने को और अधिक प्रभावशाली बनाना चाहता था। लम्बे अंतराल से यह सुनिश्चित होना था कि उनका पूरा होना कोई मानवीय आविष्कार नहीं था। (3) शायद परमेश्वर मसीहा के मिशन के लिए धार्मिक और राजनैतिक स्थिति के अनुकूल होने की प्रतीक्षा कर रहा था। पौलुस ने लिखा है, "परन्तु जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा" (गलातियों 4:4क)। द न्यू लिविंग ट्रांसलेशन में "परन्तु जब सही समय आया, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा" है।

स्रोत

इस तथ्य का कि दोनों नियमों के बीच का समय भविष्यवाणी की चुप्पी का समय था, यह अर्थ नहीं है कि हम उन वर्षों के बारे में कुछ नहीं जानते, जिनसे यीशु के समय का संसार बना था। हमारे पास इसके बारे में जानकारी प्राप्त करने के कई स्रोत हैं।

(1) *अपोक्रिफल लेख।* कुछ बाइबलों में पुराने और नये नियम के बीच पाई जाने वाली चौदह पुस्तकों को "अपोक्रिफा" कहा जाता है। "अपोक्रिफा" का अर्थ है, "छुपा हुआ।" यहूदी लोग इन्हें परमेश्वर की प्रेरणा से लिखा हुआ नहीं मानते थे,[4] न ही वे यीशु और उसके प्रेरितों को परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए मानते थे।[5] कई पुस्तकें ऐसी हैं, जो फारसियों तथा अन्य मूर्तिपूजक लोगों के अन्धविश्वासों को दिखाती हैं। फिर भी, कुल मिलाकर उन पुस्तकों से इतिहास और यहूदियों के रीति-रिवाज़ों के बारे में पता चलता है। मक्काबियों की पहली पुस्तक विशेष रूप से सहायक है, क्योंकि इसमें 175 और 132 ईस्वी पूर्व के बीच यहूदिया में रहने वाले यहूदी लोगों का इतिहास है।

(2) *जोसेफस के लेख।* जोसेफस एक यहूदी इतिहासकार था, जिसका जन्म लगभग 37 ईस्वी में हुआ था। टाइटस का यरूशलेम पर कब्ज़ा और विनाश उसी के समय हुआ था और उसने दो महत्वपूर्ण पुस्तकें *द एंटिक्विटीज़ ऑफ़ द ज्यूस* (सृष्टि से लेकर उसके लोगों का एक इतिहास) और *द ज्यूइश वार्ज़* (170 ईस्वी पूर्व से उसके समय तक का यहूदियों का एक वृत्तांत) हैं।[6] जोसेफस के कुछ "तथ्यों" पर प्रश्न उठाए गए हैं, परन्तु उसके लेख जानकारी का मुख्य स्रोत हैं।

(3) *कई यूनानी और रोमी गवाहियां।* इनमें से कुछ का इस शृंखला में उल्लेख किया जाएगा।

(4) *पुरातत्वीय खोजें।* पलिश्तीन और अन्य स्थानों पर की गई महत्वपूर्ण खोजें कई बार यहूदियों के इतिहास और उनकी जीवन शैली पर प्रकाश डालती हैं।

(5) *पवित्र शास्त्र।* इस समय की कुछ जानकारी सुसमाचार के वृज़ांतों से भी मिल सकती है।

चार साम्राज्य

दोनों नियमों के बीच के चार सौ या इससे अधिक वर्षों के दौरान, परमेश्वर अपने उद्देश्यों पर काम करते हुए, मनुष्यों के मामलों में सज़्मिलित था। उन वर्षों के राजनैतिक ढांचे की रूपरेखा बाबुल के राजा नबूकदनेसर को मिले स्वप्न में, दानिय्येल 2 अध्याय में दी गई है।

> ... तब एक बड़ी मूर्ति देख पड़ी, ... जो लज़्बी चौड़ी थी; उसकी चमक अनुपम थी, और उसका रूप भयंकर था। उस मूर्ति का सिर तो चोखे सोने का था, उसकी छाती और भुजाएं चांदी की, उसका पेट और जांघें पीतल की, उसकी टांगें लोहे की और उसके पांव कुछ तो लोहे के और कुछ मिट्टी के थे (दानिय्येल 2:31-33)।

दानिय्येल ने राजा नबूकदनेसर को बताया था कि वह (और बाबुल का राज्य) सोने का सिर थे (आयतें 37, 38)। फिर इस नबी ने कहा:

> तेरे बाद एक राज्य और उदय होगा जो तुझ से छोटा होगा; फिर एक और तीसरा पीतल का सा राज्य होगा जिस में सारी पृथ्वी आ जाएगी। और चौथा राज्य लोहे के तुल्य मजबूत होगा; लोहे से तो सब वस्तुएं चूर चूर हो जाती और पिस जाती हैं; इसलिए जिस भांति लोहे से वे सब कुचली जाती हैं, उसी भांति, उस चौथे राज्य से सब कुछ चूर चूर होकर पिस जाएगा (आयतें 39, 40)।

पवित्र शास्त्र और इतिहास से हम जानते हैं कि दानिय्येल 2 अध्याय में बताए गए चार राज्य (1) बाबुल या बेबिलोन का साम्राज्य, (2) मादा-फारस का साम्राज्य, (3) यूनानी साम्राज्य और (4) रोमी साम्राज्य ही थे।[7]

पुराने नियम के पूरा होने तक पहले साम्राज्य (बाबुल) का पतन हो चुका था और दूसरे राज्य (मादा-फारस) का शासन आ गया था (देखें दानिय्येल 5:28, 30, 31; 6:8, 12, 15, 28; 8:20; 10:1; 11:1; एज्रा 1:1-4; एस्तेर 1:19)। इसलिए हमारी रुचि दूसरे, तीसरे और चौथे राज्यों की घटनाओं में है।

मादा-फ़ारस काल[8] (539-333 ई.पू.[9])

जैसे पहले भी ध्यान दिलाया गया था, पुराने नियम के अन्त में कनान पर फारसियों का नियन्त्रण था। यहूदियों के लिए यह मूलत: सहिष्णु होने का समय था। फ़ारसियों ने यहूदी कौम को पड़ोस के फ़ारसी राज्यपाल के अधीन रहकर, महायाजक के शासन की अनुमति दी हुई थी।

इस काल के दौरान, वापस आने वाले यहूदियों और कनान के लोगों के साथ घुल-मिल जाने वालों में तनाव बढ़ गया (देखें एज्रा 4:4; नहेमायाह 4:1-8)। ये लोग यहूदा के उज़र में, जिसे सामरिया के नाम से जाना जाता है, बस गए थे (देखें एज्रा 4:10, 17; नहेमायाह 4:2) जिस कारण उन्हें ''सामरी'' कहा जाने लगा। 2 राजा 17:24-33 में पता चलता है कि सामरियों ने किस प्रकार यहोवा की आराधना में मूर्तियों के देवताओं की आराधना शामिल कर दी थी। आयत 33 कहती है, ''वे यहोवा का भय मानते तो थे, परन्तु ... अपने-अपने देवताओं की भी उपासना करते रहे।'' यीशु के आगमन के समय, सामरी लोग देश के केन्द्र में रहते थे (यूहन्ना 4:3, 4)। यहूदियों और सामरियों के तनावपूर्ण सम्बन्ध के कारण यीशु के जीवन की कई घटनाओं की पृष्ठभूमि तैयार हुई (लूका 10:33; 17:16; यूहन्ना 4:9)।

यूनानी काल[10] (333-165 ई.पू.)

(1) *सिकन्दर महान (333-323 ई.पू.)।* 336 ई.पू. में, बीस वर्षीय सिकन्दर महान ने यूनान की सेना की कमान सम्भाल ली। कुछ ही वर्षों में उसने संसार पर विजय प्राप्त कर ली। अपनी विजयों के दौरान उसने यहेजकेल 26 और 28 में सोर नगर के विरुद्ध की गई भविष्यवाणी को पूरा करते हुए उसका विनाश कर दिया। उसके प्रभाव के कारण यूनानी संस्कृति पूरे संसार में फैल गई। उसने यूनानी प्रभाव का केन्द्र बनाने के लिए नील पर सिकन्द्रिया नामक एक नगर बसाया। मसीही लोगों के लिए इस तथ्य का विशेष महत्व है कि तब तक यूनानी भाषा विश्वव्यापी बन चुकी थी। नया नियम *कोयनि* (अर्थात आम बोल-चाल की) यूनानी भाषा में लिखा गया है।[11]

सिकन्दर ने लगभग 333 ई.पू. में यरूशलेम पर कब्ज़ा कर लिया। जोसेफस के लेखों से पता चलता है कि किस प्रकार महायाजक ने नगर की दीवारों के बाहर आकर इस विजय का स्वागत किया था। सिकन्दर ने यहूदियों को विशेष अधिकार दे रखे थे। उसने उन्हें अपने साम्राज्य के दूर-दराज के क्षेत्रों में बसाने के लिए तैयार करके, उपनिवेशकों के रूप में इस्तेमाल किया।

इस काल के दौरान, शास्त्रियों ने यहूदियों में विशेष वर्ग के रूप में अपनी पहचान बना ली। शास्त्रियों के बारे में हम विस्तार से बाद में बात करेंगे।

323 ई.पू. में सिकन्दर की मृत्यु के बाद सज़ा के लिए बीस वर्ष तक संघर्ष चला। अन्ततः, उसका राज्य चार क्षेत्रों अर्थात यूनान, एशिया, मिस्र और सीरिया में बंट गया।[12] हमारी दिलचस्पी इनमें से दो राज्यों मिस्र और सीरिया में है। टालमियों[13] ने मिस्र पर नियन्त्रण कर लिया जबकि सिलोकसियों[14] ने सीरिया पर कब्ज़ा जमा लिया था।

(2) *टालमी (323-198 ई.पू.)।* इस अवधि में मिस्र और सीरिया के बीच स्थित, पलिश्तीन दो शक्तियों के बीच के संघर्ष में उलझा हुआ था।[15] जब मिस्र की सेनाएं सीरिया की ओर आगे बढ़तीं, तो वे पलिश्तीन को उज़र की ओर अपने कब्ज़े में कर लेतीं। जब सीरियाई सेनाएं दक्षिण में मिस्र की ओर बढ़तीं तो वे पलिश्तीन को हथियाने की कोशिश करतीं।

अगले सौ साल से भी अधिक समय तक, यहूदी लोग कभी-कभी सीरिया के नियन्त्रण में रहते थे, परन्तु ज़्यादातर समय वे मिस्र के अधीन ही थे। टालमी प्रथम ने यरूशलेम पर कज़्जा किया और सिकन्द्रिया को उपनिवेश बनाने में सहायता के लिए कई यहूदियों को साथ ले लिया। उसने उन्हें पूरी नागरिकता देकर यहूदी विद्वता को बढ़ावा दिया।

टालमियों के शासन का समय मूलत: यहूदी लोगों के लिए शान्ति का समय था। इस काल में एक महत्वपूर्ण उपलज़्धि मिस्र में बाइबल का सप्तति अनुवाद था। टालमी द्वितीय ने सिकन्द्रिया के बड़े पुस्तकालय में रखने के लिए इब्रानी पवित्र शास्त्र का यूनानी में अनुवाद करने की आज्ञा दी। परज़्परा के अनुसार यह अनुवाद 285 ई.पू. के लगभग पूरा हुआ, इसे सज़र यहूदी विद्वानों द्वारा तैयार किया गया था। (इसीलिए इसे ''सप्तति'' या Septuagint नाम दिया गया, जिसका अर्थ है ''सज़र।'') नये नियम के लेखकों और वज़्ताओं द्वारा दिए गए पुराने नियम के बहुत से उद्धरण सप्तति अनुवाद से ही हैं।

मिस्र और सीरिया का यह संघर्ष इस काल के दौरान जारी रहा। अन्तत:, 198 ई.पू. के लगभग पलिश्तीन पर सीरिया का कज़्ज़ा हो गया।

(3) *सिलोकसी (198-165 ई.पू.)।* शासन को सुचारु रूप से चलाने के लिए सिलोकसियों ने पलिश्तीन को यहूदिया, सामरिया, गलातिया, पिरिया, और त्रखोनीतिस पांच राज्यों में विभाजित किया। इन व अन्य विभाजनों के बारे में हम बाद में विस्तार से बात करेंगे।

यहूदी इतिहास में सीरियाई शासन का काल सबसे अन्धकारमय था। मुज़्य खलनायक अन्तियोकुस चतुर्थ था, जिसे अन्तियोकुस एपिफेनिस भी कहा जाता है। एफ. लेगर्ड स्मिथ ने उसे ''सार्वजनिक पद पर सबसे क्रूर लोगों में से एक''[16] कहा है। एपीफेनिस (175-165 ई.पू.) यहूदियों से घृणा करता था और उन्हें यूनानी बनाने के प्रयास में था। उसने यरूशलेम में ज्यूस (जुपिटर) का मन्दिर बनवाकर यहूदी धर्म को पूरी तरह से मिटाने का प्रयास किया। उसने यरूशलेम के मन्दिर को बन्द करवा दिया, खतने को अवैध घोषित कर दिया और यहूदी धर्म को मानने वाले किसी भी व्यज़्ति के लिए मृत्यु दण्ड निर्धारित कर दिया। उसने हज़ारों यहूदियों को गुलाम बनाकर बेच दिया और हज़ारों को मार दिया। उसने मन्दिर का भण्डार ले लिया और वेदी पर सूअर की बलि दी।[17] उसने पवित्र भवन को अपवित्र करने के लिए, पानी में राख मिलाकर ''सूअर का पानी'' पूरे मन्दिर पर छिड़कवाया।

स्वतन्त्रता का काल (165-63 ई.पू.)

एंटियोकुस एपीफेनिस की क्रूरताओं से मज़ित्याह नामक बुज़ुर्ग याजक की अगुआई में यहूदियों को विद्रोह करने के लिए प्रेरणा मिली। मज़ित्याह के पांच साहसी और योद्धा पुत्र थे, जिनमें से एक, यहूदा, इस विद्रोह का अगुआ बना। यहूदा को ''हथौड़ा यहूदा'' के नाम से भी जाना जाता था। ''हथौड़ा'' के लिए यूनानी शज़्द ''मज़्काबी'' है, जिस कारण इसे कई बार यहूदी इतिहास का मज़्काबी काल कहा जाता है।[18] यहूदा मज़्काबी ने 165 ई.पू. में फिर से यरूशलेम पर विजय पा ली। मन्दिर को शुद्ध किया गया और फिर से परमेश्वर को समर्पित किया गया। यह समर्पण के पर्व का आरज़्भ था (देखें यूहन्ना 10:22)।

सीरिया के साथ युद्ध 163 से 143 ई.पू. तक चलता रहा। अन्ततः, यहूदियों को स्वतन्त्रता मिल गई। 135 ई.पू. में जॉन हिरकैनस के अधीन एक यहूदी राजवंश स्थापित हुआ।

इस काल के दौरान, कई यहूदी गुट पैदा हो गए, जिनमें फरीसी और सदूकी भी थे। इनके और दूसरे गुटों के बारे में हम बाद में विस्तार से बात करेंगे। इसके अलावा इस काल के दौरान, महायाजक का पद धार्मिक की जगह राजनैतिक हो गया। महायाजकों की नियुज़्ति वही लोग करते थे, जिनके हाथ में शज़्ति होती थी।[19]

इस काल के अन्तिम वर्ष घरेलू कलह के वर्ष थे। जॉन हिरकैनस के वंशजों के अलग-अलग सदस्य सिंहासन के लिए प्रतिद्वंद्वी बन गए थे। उनके विरोध में षड्यन्त्र और राजनैतिक हत्याएं हुईं। अन्ततः झगड़े में लिप्त एक गुट ने उभर रही शज़्ति, रोम से समर्थन मांगा। इस यहूदी विवाद में रोम को शामिल करने का अर्थ मुर्गियों द्वारा अपना झगड़ा निपटाने के लिए बिल्ली को निमन्त्रण देने की तरह था। इसके परिणामस्वरूप शीघ्र ही यहूदियों को अपनी स्वतन्त्रता से हाथ धोना पड़ा।

रोमी काल (63 ई.पू.-70 ई.[20])

63 ई.पू. में यरूशलेम को पौज़्पे महान ने जीत लिया था।[21] यीशु के जीवनकाल में रोमी अगस्तुस (ओज़्टेवियुस) कैसर (27 ई.पू.-14 ई.) (लूका 2:1) और तिबरियुस कैसर (14-37 ई.) (लूका 3:1) रोमी हाकिम थे।

पलिश्तीन के हाकिम रोम के प्रति जवाबदेह थे। आरज़्भ में, यहूदिया का हकिम अंतिपत्रिस था। उसकी गद्दी पर उसका पुत्र हेरोदेस महान बैठा, जो यहूदिया का राजा था (37-3 ई.पू.) (लूका 1:5)। हेरोदेस एक कुशल शासक था, परन्तु उसकी बुराइयां उसके शासकीय प्रबन्ध की तुलना में कहीं अधिक थीं। उसने यरूशलेम में रथ दौड़ और दूसरे यूनानी रीति-रिवाज़ शुरू करके यहूदियों की घृणा की आग में घी डाल दिया। उनका समर्थन दोबारा पाने के प्रयास में उसने मन्दिर को फिर से बनाना शुरू किया (देखें यूहन्ना 2:20), जिसे एपीफेनिस द्वारा नष्ट कर दिया गया था। यह हेरोदेस यीशु को मरवाने के चज़्कर में छोटे बच्चों की हत्या करने वाले राजा के रूप में बदनाम था (मज़ी 2:1-18)।

हेरोदेस की मृत्यु के समय (मज़ी 2:19) देश चौथाई (''चार का शासन'') के अधीन था: (1) आरज़्भ में, अरखिलाऊस नामक एक पुत्र को यहूदिया और सामरिया पर राजा ठहराया गया था (मज़ी 2:22)। 6 ईस्वी में उसे पद से हटाकर एक के बाद एक राज्यपाल लगाए गए। (पिलातुस छठा राज्यपाल था [लूका 3:1]।) (2) एक और पुत्र, हेरोदेस अंतिपास (नये नियम में कभी उसे केवल ''हेरोदेस'' और कभी ''हेरोदेस नामक चौथाई'' के रूप में अन्तर किया गया है), गलील और पिरिया का हाकिम बनाया गया था (लूका 3:1; देखें मज़ी 14:1)। यीशु की निजी सेवकाई के दौरान हाकिम होने के कारण वह सबसे प्रसिद्ध हेरोदेस है। (3) एक तीसरा पुत्र, फिलिप्पुस ''त्रखोनीतिस का और इतूरैया का हाकिम'' था[22] (लूका 3:1; देखें मज़ी 14:3)-जिसे कभी-कभी बाशान जिला कहा जाता है।[23] (4) एक चौथा क्षेत्र, जिसे अबिलेने कहा जाता है,[24] लिसानियास को

दिया गया था (लूका 3:1), जो हेरोदेस नहीं था। अबिलेने उस क्षेत्र में नहीं आता था, जिस पर हेरोदेस महान का शासन था।

रोमियों ने यहूदियों को कई रियायतें दी हुई थीं: उन्हें सेना के कर से छूट दी गई थी। उन्हें सज़्त के दिन अदालत में नहीं बुलाया जा सकता था। उन्हें ताज़्बे के खुदे हुए सिज़्के जारी करने की अनुमति थी, जिन पर कोई आकृति न हो।[25] रोमी सिपाहियों को उनके देश में आकृतियों वाले झण्डे ले जाने की मनाही थी।

मसीही लोगों के लिए यह सबसे महत्व की बात है कि मसीह के लिए रोमी काल में कैसे मार्ग तैयार हुआ। इस मार्ग के तैयार होने में *Pax Romana* (रोमी शान्ति), विश्वव्यापी भाषा का प्रसार (यूनानी), और सड़कों का व्यापक नेटवर्क, जिससे पूरे साम्राज्य में यातायात तथा संचार की सुविधा हुई, बनना शामिल था।

पलिश्तीन देश

पुराने नियम में, उस देश को जिसमें बाद में यीशु का जन्म हुआ ''कनान'' कहा जाता था (उत्पज़ि 12:5; निर्गमन 6:4; यहोशू 14:1)। नये नियम के समयों में, इसे ''पलिश्तीन'' कहा जाता था,[26] यद्यपि यह नाम नये नियम में नहीं मिलता है।[27]

इस शृंखला में यीशु के कामों को देखने में सहायता करने के लिए नज़्शे दिए जाएंगे। सुसमाचार की पुस्तकों में मसीह के जीवन की लगभग 150 घटनाओं का विवरण है; जो एक सौ या इससे अधिक विशेष भौगोलिक स्थानों से सज़्बन्धित हैं।

''मसीह के जीवनकाल में पलिश्तीन'' का मानचित्र देखें। देश की लज़्बाई के बारे में कहने का एक प्रसिद्ध ढंग ''दान से लेकर बर्शेबा तक'' था (न्यायियों 20:1; देखें 1 शमूएल 3:20; 1 राजा 4:25)। उज़र में दान से लेकर दक्षिण में बर्शेबा तक की दूरी लगभग 240 किलोमीटर थी। देश का क्षेत्रफल पच्चीस से तीस हज़ार था।[28] तुलना करने पर, अमेरिका के पचास में से चालीस राज्य उससे बड़े मिलेंगे।[29]

मसीह के जीवनकाल में तीन इलाके प्रसिद्ध थे, सभी यरदन नदी के पश्चिम में थे। (1) *यहूदिया।* यहूदिया यहूदियों की बहुसंज़्या वाला राज्य था। यहूदिया के वासी अपने रूढ़िवादी होने पर गर्व करते थे। यीशु अज़्सर यहूदिया में जाया करता था, विशेषकर पर्व के दिनों में। (2) *सामरिया।* जैसा कि हम पढ़ चुके हैं, सामरिया में दोगले लोग रहते थे, जिन्हें ''सामरी'' कहा जाता था। यीशु कई बार उज़र या दक्षिण में जाने के समय रास्ते में सामरिया से होकर जाता था। (3) *गलील।* गलील में यहूदी और अन्यजाति दोनों रहते थे (देखें मज़ी 4:15)। यहूदिया के लोग इसे पिछड़ा इलाका मानते थे। यीशु ने अपने जीवन का अधिकांश समय गलील में ही बिताया।

नज़्शे पर और इलाकों का भी मसीह के जीवन में महत्व है। कई अवसरों पर, यीशु गलील सागर के पूर्वी तट की ओर जाता था, जिसे हमारे मानचित्र में ''बाशान जिला'' के रूप में दिखाया गया था।[30] लूका 3:1 में इसे ''इतूरैया और त्रखोनीतिस का इलाका'' कहा गया है। इस इलाके के दक्षिणी भाग को ''दिकापुलिस'' कहा जाता था, जिसका मूल अर्थ

है ''दस नगर''[31] (मत्ती 4:25; मरकुस 5:20; 7:31)।

अपनी सेवकाई के अन्त के निकट, यीशु गलील से कई बार बाहर गया। इनमें से एक फिनीके देश के नगरों, सोर और सैदा के इलाके के पश्चिम में था (मत्ती 15:21)। वह यरदन के पूर्व में भी कई बार गया। जोसेफस के अनुसार, यह इलाका ''पिरिया'' के नाम से प्रसिद्ध था, परन्तु सुसमाचार के वृत्तांतों में ''यरदन के पार'' वाक्यांश ही इस्तेमाल हुआ है (मत्ती 4:25; 19:1; मरकुस 10:1; यूहन्ना 10:40)।

भौगोलिक स्थिति को जानने में आपकी सहायता के लिए इस नक्शे पर कुछ प्रमुख स्थानों को शामिल किया गया है। प्रत्येक पुस्तक में, हम उस पुस्तक में दी गई घटनाओं से सम्बन्धित स्थानों को दिखाने के लिए नक्शा देंगे।

इन नक्शों के सम्बन्ध में एक सावधानी बरतनी आवश्यक है: देश का मूल विभाजन बाइबल के वृत्तांतों और बाहरी स्रोतों से थोड़ा बहुत स्पष्ट है, परन्तु विभिन्न इलाकों की सही-सही सीमाओं के बारे में स्पष्ट जानकारी नहीं है। इसलिए, ध्यान रखें कि इलाकों के बीच की रेखाएं सीमाओं की *लगभग* स्थितियां हैं।

अन्य परिवर्तन

पुराने नियम के अन्तिम दिनों और दोनों नियमों के बीच के वर्षों ने भी कई तरह से यहूदी संसार को प्रभावित किया।

पदनाम में परिवर्तन

पुराने नियम के अन्त तक, परमेश्वर के लोग पहले ही ''यहूदियों'' के रूप में प्रसिद्ध हो चुके थे (एज्रा 4:12; 5:1)। यह नाम यहूदा के दक्षिणी राज्य से लिया गया था: बाबुल की दासता से लौटने वाले अधिकतर लोग उस क्षेत्र (और यहूदा के गोत्र से) के लोगों के वंशज थे। नये नियम के समय तक, इन लोगों के लिए मुख्यतया ''यहूदी'' पदनाम ही इस्तेमाल किया जाता था (मत्ती 2:2; यूहन्ना 1:19)।

अब भी कभी-कभी उन्हें ''इस्राएली'' कहा जाता था (देखें यूहन्ना 1:47; 2 कुरिन्थियों 11:22), जो इस बात का संकेत था कि वे इस्राएल के वंशज हैं। उनकी पारम्परिक भाषा के कारण उन पर कभी-कभी ''इब्रानी'' होने का भी ठप्पा लगता है (प्रेरितों 6:1; 2 कुरिन्थियों 11:22)।

भाषा में परिवर्तन

बाबुल की दासता से लौटने के बाद, यहूदियों की सामान्य भाषा के रूप में इब्रानी का स्थान अरामी भाषा लेने लगी। अरामी, जो सीरिया की भाषा थी, इब्रानी से वैसे ही मिलती-जुलती थी, जैसे लातीनी से इतालियानी। इतालियानी स्कूली लड़कों द्वारा लातीनी भाषा का अध्ययन करने की तरह यहूदी लड़के भी अभी तक स्कूल में इब्रानी भाषा सीखते थे।

यीशु के समय में विश्वव्यापी भाषा यूनानी ही थी, जबकि रोमी सरकार की आधिकारिक

भाषा लातीनी थी। यीशु को क्रूस पर चढ़ाने के समय उसके सिर पर लिखी तख़्ती इब्रानी, लातीनी और यूनानी तीन भाषाओं में थी (यूहन्ना 19:20)।

व्यवसाय में परिवर्तन

दासता से पूर्व, यहूदी मुख्यतया किसान और चरवाहे ही होते थे। दासता के दौरान अपनी सख़्पज़ि से दूर रहने के कारण, उन्हें समझ आया कि उनमें व्यापार करने की कुशलता है। यीशु के समय तक, यहूदी व्यापारी संसार भर में फैले हुए थे।

आराधना में परिवर्तन

यरूशलेम का मन्दिर अभी भी यहूदियों के लिए विशेष था। बाबुल की दासता से लौटने के बाद जरूज़्बाबेल द्वारा बनाया गया मन्दिर ऐपीफेनिस ने पूरी तरह नष्ट कर दिया था। हेरोदेस महान ने यीशु के जन्म से लगभग 16 वर्ष पहले इस मन्दिर को दोबारा बनवाना शुरू किया था (देखें यूहन्ना 2:20); यीशु की सेवकाई के समय भी इसका कार्य प्रगति में था।[32] पलिश्तीन में रहने वाले विश्वासी लोग पर्व मनाने के लिए साल में कई बार यरूशलेम आते थे।[33] दूसरे देशों में रहने वाले भख़्त यहूदी भी समय-समय पर यरूशलेम की यात्रा करते थे (प्रेरितों 2:5-11)।

परन्तु मसीह के समय तक, *आराधनालय* (*synogogue*) यहूदियों के धार्मिक कार्यों का केन्द्र बन गया था। पुराने नियम में आराधनालय का कोई उल्लेख नहीं मिलता, परन्तु नये नियम में इसे प्रमुख स्थान दिया गया है (मख़्ी 12:9; 13:54 [हिन्दी में इसका अनुवाद सभा भी हुआ है-अनुवादक])। आराधनालय का आरख़्भ सख़्भवतया यहूदियों के दासता में रहने के समय ही हुआ, जब वे ठहराए हुए दिनों पर पर्व मनाने के लिए यरूशलेम में नहीं जा सकते थे। आराधनालय की स्थापना के लिए केवल दस यहूदी पुरुष आवश्यक होते थे।[34] यरूशलेम में और संसार भर में सैकड़ों आराधनालय थे। आराधनालय में होने वाली सख़्त की प्रार्थनाएं बड़ी साधारण होती थीं, जिनमें गीत, प्रार्थनाएं और पवित्र शास्त्र से पढ़ना और अध्ययन करना होता था।[35] अधिकतर आराधनालयों के साथ स्कूल भी होते थे, जहां उस क्षेत्र के यहूदी लड़कों को भाग लेना अनिवार्य था।

धार्मिक नेतृत्व में परिवर्तन

पुराने नियम में, याजकों को धार्मिक अगुओं के रूप में मान्यता प्राप्त थी। उनका काम परमेश्वर द्वारा बीच-बीच में भेजे गए एक नबी द्वारा आसान हो जाता था। मसीह के जीवन का अध्ययन करते हुए, हम याजकों और उनके लेवीय सहायकों के बारे में पढ़ेंगे (लूका 10:31, 32)। विशेष महत्व इस तथ्य का होगा कि वास्तव में, यीशु की सेवकाई के दौरान, यहूदी मत में *दो* महायाजक थे (देखें लूका 3:2)। महायाजक हन्ना को रोमी राज्यपाल द्वारा पद से हटा दिया गया था, परन्तु अपने प्रभाव से उसने अपने दामाद कैफा (यूहन्ना 18:13) को अपनी जगह नियुख़्त करवा दिया था (मख़्ी 26:3, 57; यूहन्ना 11:49; 18:24)। अधिकतर यहूदियों

की नज़रों में, हन्ना ही वास्तविक महायाजक था (देखें प्रेरितों 4:6)।

नये नियम के समय तक याजकों के अलावा और नेतृत्व भी उभर आया था। पहले तो रब्बी थे (मत्ती 23:7, 8),[36] जो आराधनालयों और आराधनालय की पाठशालाओं के शिक्षक थे। रब्बियों ने धार्मिक अधिकारियों के रूप में याजकों की जगह ले ली थी। कुछ लोग व्यवस्था की रब्बियों की व्याख्याओं का महत्व स्वयं व्यवस्था के समान ही मानते थे।[37]

इसके बाद शास्त्री थे, जिनका उल्लेख पहले किया गया है (मत्ती 2:4; 5:20; 7:29; 9:3)। यूनानी शब्द के अनुवाद ''शास्त्री'' का मूल अर्थ ''लेखक'' है। मूलत:, शास्त्रियों की ज़िम्मेदारी महत्वपूर्ण घटनाओं को लिखना होती थीं।[38] नये नियम के समयों तक, उनकी ज़िम्मेदारी पुराने नियम की प्रतियां बनाना होती थी। वे व्यवस्था के अधिकारियों के रूप में प्रसिद्ध थे और कभी-कभी उन्हें ''व्यवस्थापक'' भी कहा जाता था (लूका 7:30; 11:45, 46, 52)।[39] वे नागरिक व्यवस्था अथवा कानून के नहीं, बल्कि धार्मिक व्यवस्था के विशेषज्ञ थे। अधिकतर शास्त्री फरीसियों में से ही थे (''फरीसी'' पर चर्चा देखें)।

फिर उनमें वहां सभा होती थी। यह महासभा यहूदियों का ''सर्वोच्च न्यायालय'' था। ''महासभा'' एक यूनानी शब्द है, जिसका हिन्दी की तरह KJV और NASB में ''council'' अनुवाद किया गया है (मत्ती 26:59; मरकुस 15:43; लूका 22:66) परन्तु NIV में इसे लिप्यंतरित शब्द ''Sanhedrin'' (सन्हेद्रिन) ही रहने दिया गया है। इतिहास में लगभग 200 ई.पू में सन्हेद्रिन शब्द पहली बार यहूदी कौम के आन्तरिक मामलों के प्रबन्ध करने वाले समूह के रूप में आया। पारम्परिक तौर पर, सन्हेद्रिन या महासभा में सत्तर सदस्य होते थे, जिन पर महायाजक प्रधान के रूप में कार्य करता था। अधिकतर सदस्य सदूकी ही होते थे (''सदूकी'' पर चर्चा देखें), परन्तु फरीसियों के अल्पमत शक्तिशाली था (''अन्य गुट'' पर चर्चा देखें)।

उनके अधिकार और समानता को बनाए रखने के लिए ऊपर सभी प्रभावशाली यहूदियों का उल्लेख करना आवश्यक था। इसी कारण वे यीशु के सबसे बड़े शत्रु बन गए।

गुटबाज़ी का उदय

यीशु के समय में यहूदी गुटों का विषय इतना महत्वपूर्ण है कि इसे अलग भाग में देना ही उचित है। इनमें से अधिकतर गुट धर्म के अलावा राजनीति और संस्कृति से भी प्रेरित थे।

फरीसी

''फरीसी'' एक इब्रानी क्रिया है, जिसका अर्थ ''अलग करना'' है। कुछ लोगों का विचार है कि इस गुट का आरम्भ सिलोकस के सत्ता में रहने के समय यहूदियों को यूनानी संस्कृति अपनाने के लिए विवश करने से हुआ था। मूलत:, फरीसी धार्मिक श्रद्धा वाले देशभक्त थे। यीशु के समय तक, वे स्व-धर्मी और परम्परावादी गुट बन चुके थे (मत्ती 23:1-36)। उनकी संख्या कम थी, परन्तु लोगों में वे बहुत प्रसिद्ध थे। इसके कारण उनका प्रभाव काफी था। सभी व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए, वे बाइबल से बाहर की ''पुरनियों की

रीति'' को व्यवस्था के बराबर मानते थे (मरकुस 7:3)। यीशु द्वारा इन परज़्पराओं को नकारने के कारण (मज़ी 15:1-14), फरीसी उसके कट्टर शत्रु बन गए थे।

सदूकी

''सदूकी'' नाम का सुलैमान के अधीन पहला महायाजक था (1 राजा 1:32, 34, 38, 45; देखें यहेजकेल 40:46; 44:15)। हेरोदेस महान के समय से यरूशलेम के नाश होने तक हर महायाजक सदूकी ही होता था। यह एक धनाढ्य, कुलीन गुट था, जिसमें अधिकतर याजक होते थे। कुछ लोगों का मानना है कि सदूकियों का आरज़्भ फरीसियों के आरज़्भ के साथ ही हुआ। वे यूनानी तरीकों को स्वीकार करते *थे*। सज़ा में किसी भी व्यज़्ति के साथ सहयोग करने की अपनी इच्छा के कारण, वे एक राजनैतिक शज़्ति थी। यूनानी फिलॉस्फी को स्वीकार करने के कारण, उन्होंने पुनरुत्थान तथा मृत्यु के बाद जीवन की अवधारणाओं को नकार दिया था (मरकुस 12:18; प्रेरितों 23:6-8)। वे यीशु से घृणा करने के लिए आगे आए, ज़्योंकि उसने उनके अधिकार को चुनौती दी थी।

अन्य गुट

सुसमाचार के वृज़ांतों में अन्य गुटों का भी उल्लेख है। एक तो पूरे पलिश्तीन में सिंहासन पर हेरोदेस को बिठाने को समर्पित हेरोदियों का एक राजनैतिक गुट था (मज़ी 22:16; मरकुस 3:6; 12:13; देखें मरकुस 8:15)।

ज़ेलोतेस यहूदी विद्रोहियों का एक गुट था, जो तलवार के बल पर रोम पर विजय पाने को समर्पित था। इस गुट का एक आदमी शमौन, प्रेरित भी बन गया था (मज़ी 10:4; मरकुस 3:18; लूका 6:15)।

इतिहास से हमें पता चलता है कि एक और धार्मिक गुट था, इसैनियों का। यह धार्मिक अलगाववादियों का एक समूह था, जिन्होंने अपने आप को समाज से अलग कर लिया था। (हो सकता है कि वे फरीसियों के गुट से निकले हों।) कुछ लोगों का मानना है कि कुमरान समाज (प्रसिद्ध ''मृत सागर के चरम पत्र'' का स्रोत) इसैनियों से सज़्बद्ध था। ''इसैनी'' नाम बाइबल में नहीं मिलता। मैंने इस गुट का नाम केवल कभी-कभी सुने जाने वाले दावे का कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला या तो इसैनी था या उसकी शिक्षा और व्यवहार इसैनियों से ली गई थी। इस दावे की पुष्टि करने का तो कोई प्रमाण नहीं, परन्तु इसे नकारने के काफी प्रमाण हैं।[40]

मसीहा से जुड़ी अपेक्षाएं

इस पाठ के पहले भाग में मैंने कहा था कि यहूदी लोग परमेश्वर के मसीहा की राह देख रहे थे। मज़ी की पुस्तक पर प्रस्तुति में मैंने समझाया था:

''मसीहा'' या मसायाह इब्रानी शज़्द से लिया गया है, जिसका अर्थ ''अभिषिज़्त''

है। इसका समानार्थक यूनानी शब्द ''ख्रिस्तुस'' है (यूहन्ना 1:41)। याजकों और दूसरे लोगों की नियुक्ति में अभिषेक किया जाता था (निर्गमन 28:41; 29:7); परन्तु जब कोई यहूदी ''परमेश्वर का अभिषिक्त'' शब्द सुनता था तो उसका ध्यान *राजा* पर ही जाता था (देखें 1 शमूएल 10:1; 24:6; ज़.सं. 2:2, 6)।

इस पाठ में मैंने यह सुझाव भी दिया था कि आखिर यीशु के समय तक अन्ततः, मसीहा के आने की प्रतीक्षा चरम पर थी। शमौन और हन्ना की उत्सुकता में यह देखा जा सकता है, जिन्होंने मन्दिर में बालक यीशु का स्वागत किया था (लूका 2:25-38)। शमौन ''प्रभु के मसीह'' (लूका 2:26) की राह देख रहा था। हन्ना ने उन सब से ''जो यरूशलेम के छुटकारे की बाट जोहते थे,'' यीशु के विषय में बातें कीं (लूका 2:38)। जब यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने अपना काम आरम्भ किया, तो ''लोग आस लगाए हुए थे, और सब अपने-अपने मन में यूहन्ना के विषय में विचार कर रहे थे, कि क्या यही मसीह तो नहीं है'' (लूका 3:15)। यहां तक कि सामरियों का भी विश्वास था कि ''मसीह जो ख्रीस्तुस कहलाता है, आनेवाला है'' (यूहन्ना 4:25)। अरिमतिया के रहने वाले यूसुफ को ''परमेश्वर के राज्य की बाट जोहनेवाला'' (लूका 23:51) कहा जाता था। लोगों की सामान्य तड़प यीशु को राजा बनाने के उनके प्रयास में (यूहन्ना 6:15) और यरूशलेम में विजयी प्रवेश के दौरान उत्तेजना में देखी जा सकती है (यूहन्ना 12:13)।

मसीहा का आना स्पष्टतया चर्चा का विषय बना हुआ था। उसके जीवन की सब बातें लोगों को पता थीं, उसने दाऊद के वंश से होना था (मत्ती 22:42); उसका जन्म बैतलहम में होना था (मत्ती 2:5, 6; यूहन्ना 7:42)। मसीहा के आने सम्बन्धी चर्चा के साथ उससे पहले आने वाले का अनुमान भी लगाया जाता था (देखें यूहन्ना 1:21; मत्ती 16:14)। झूठे मसीह उठ खड़े हुए थे, जिससे लोगों की उम्मीदें जाग उठी थीं।[41]

इस सारे अनुमान के साथ, यूहन्ना के इन शब्दों को समझना कठिन है: ''वह अपने घर आया और उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया'' (यूहन्ना 1:11)। साधारण तौर पर यहूदियों द्वारा और विशेष तौर पर यहूदी अगुओं द्वारा यीशु का ठुकराया जाना नये नियम का प्रमुख विषय है (मत्ती 21:42; मरकुस 12:10; लूका 17:25; प्रेरितों 4:11; 1 पतरस 2:4, 7)। यीशु को मसीहा के रूप में स्वीकार क्यों नहीं किया गया, जिसकी इतने लम्बे समय से प्रतीक्षा की जा रही थी?

मूल रूप में, उसे इसलिए ठुकराया गया, क्योंकि यहूदियों के मन में मसीहा के बारे में पहले से सोच बनी हुई थी और यीशु उनकी सोच के अनुकूल नहीं था। पुराने नियम में बताया गया था कि मसीहा परमेश्वर का भेजा हुआ राजा होगा (यशायाह 9:6, 7), जिसने दाऊद के शाही परिवार से होना था (भजन संहिता 89:3, 4)। पुराने नियम में यह *भी* बताया गया था कि मसीहा *दुख सहने वाला* सेवक होगा (भजन संहिता 22:1-21; यशायाह 53:1-12), परन्तु इस प्रकार की भविष्यवाणियों को मुख्यतः नज़रअन्दाज कर दिया गया था। यहूदी लोगों के मन में यह स्पष्ट था कि रोमियों को हराने के लिए तथा दाऊद और सुलैमान के दिनों की तरह इस्राएल के राज्य को फिर से बहाल करने के लिए उन्हें

एक ज़बर्दस्त राजनैतिक और सैनिक अगुवे की आवश्यकता है। ऐसा मसीह, जिसने यह कहा हो कि ''मेरा राज्य इस जगत का नहीं'' (यूहन्ना 18:36क), यह सब नहीं कर सकता था। यीशु उस ''गोल कील'' की तरह था, जो मसीहा के लिए उसके लोगों द्वारा बनाई गई ''चौरस छेद'' में नहीं आती थी।

सारांश

यीशु के समय के जीवन के, और विवरण भी दिए जा सकते हैं, जिनमें साधारण यहूदी परिवार के दैनिक जीवन को जोड़ा जा सकता है, परन्तु ऐसे विवरणों के लिए थोड़ी प्रतीक्षा करनी होगी। सुसमाचार की पुस्तकों के साथ सम्बन्ध बनाते हुए ही उनका परिचय दिया जाएगा।

उस संसार के बारे में जिसमें यीशु आया, आइए उस भविष्यवाणी के मसीहा जो ''ऐसी जड़ के समान उगा, जो निर्जल भूमि में फूट निकले'' (यशायाह 53:2) पर ध्यान देते हुए समाप्त करते हैं। परमेश्वर ने उसके आने की तैयारी कर ली थी (गलातियों 4:4), परन्तु लोगों के मन सूखी भूमि की तरह सूख गए थे। इस रूखे वातावरण में से, मसीह ने आना था। अन्ततः, यीशु का धर्म बढ़कर सारे संसार में फैल जाना था।

टिप्पणियां

[1]दूसरे यहूदी वापस नहीं लौटे, बल्कि जहां-जहां वे बिखरे थे, वहीं रहने लगे। इन्हें ''तितर-बितर होकर'' रहने वाले कहा जाता था (यूहन्ना 7:35; देखें याकूब 1:1)। पुराने नियम का अन्तिम पद लगभग 430-425 ई.पू. में लिखा गया था। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के जन्म से सम्बन्धित नये नियम की प्रारम्भिक घटनाएं लगभग 5 ई.पू. में घटी थीं। इससे चार सौ से कुछ अधिक वर्षों का अन्तराल बनता है। [3]स्मिथ की तीन सम्भावनाएं चुनकर अपनाई गई थीं (एफ़.लेगर्ड स्मिथ, *द नैरेटेड बाइबल इन क्रोनोलॉजिक ऑर्डर* [यूजीन, ओरिगन: हार्वेस्ट हाउस पब्लिशर्स, 1984], 1338-39)। [4]वे पुराने नियम के ''canon'' (पुराने नियम की पुस्तकें, जिन्हें परमेश्वर की प्रेरणा से माना जाता है) शामिल नहीं थे। [5]यीशु और उसके प्रेरित प्राय: पुराने नियम से उद्धृत करते थे, परन्तु वे अपोक्रिफा (अप्रामाणिक पुस्तकें) से उद्धृत नहीं करते थे। [6]जोसेफस ने *अगेंस्ट एपियन* और *ऑटोबायोग्राफी* नामक दो और पुस्तकें भी लिखी हैं, जिनका हमारे लिए अधिक महत्व नहीं है। [7]भविष्यवाणी के स्वप्न में और बातें भी थीं, जैसे रोमी साम्राज्य में पाई जाने वाली निर्बलता। हमारे लिए भविष्यवाणी का सबसे महत्वपूर्ण पहलू वह प्रतिज्ञा है, जो परमेश्वर ने अपना राज्य स्थापित करने के लिए की (दानिय्येल 2:44) अर्थात वह प्रतिज्ञा जो कलीसिया की स्थापना होने से पूरी हुई। परन्तु इस पाठ में हम भविष्यवाणी में बताए गए चार साम्राज्यों पर ध्यान केन्द्रित रखेंगे। [8]मादी और फ़ारसी संसार पर विजय पाने के लिए संयुक्त बल था, सो इसे मादा-फ़ारस साम्राज्य भी कहा जा सकता है। दूसरी ओर, फ़ारस पहले से अधिकार में था, जिस कारण इसे कभी-कभी फ़ारसी साम्राज्य भी कहा जाता है। इसलिए कभी-कभी मैं केवल फ़ारसी शासन ही कहूंगा। [9]अलग-अलग अधिकारियों द्वारा दिए जाने के कारण अलग-अलग कालों के समयों में कुछ वर्षों का अन्तर है। उन तिथियों को बिल्कुल सही न मानकर, लगभग माना जाए। अलग-अलग कालों में दी गई तिथियां केवल पलिश्तीन पर शासन तक सीमित हैं। [10]सिकन्दर महान के मकिदूनिया से होने के कारण इसे ''मकिदूनी काल'' भी कहा जाता है। दानिय्येल

8:21 में ''यूनान'' शब्द का इस्तेमाल हुआ है, इसलिए हम इस समीक्षा में इसी शब्द का इस्तेमाल करेंगे।

[11]*कोयनि* यूनानी साहित्यिक यूनानी के विपरीत, उस समय के साधारण लोगों द्वारा बोली जाने वाली यूनानी भाषा थी। [12]सिकन्दर महान के राज्य के चार भागों में विभाजन की भविष्यवाणी दानिय्येल 8:8, 21, 22 में की गई थी। [13]''टालमियों'' शब्द मिस्र पर नियन्त्रण करने वाले सेनापति टालमी के नाम से लिया गया था। [14]''सिलोकसियों'' शब्द सीरिया पर नियन्त्रण करने वाले सेनापति सिलोकस के नाम से लिया गया है। [15]''मसीह के जीवन के समय पलिश्तीन'' का मानचित्र देखें। [16]स्मिथ, 1346. सामान्यतया इस बात पर सहमति है कि दानिय्येल की कई भविष्यवाणियां एंटियोकस एपीफेनिस के क्रूर शासन से सम्बद्ध हैं (उदाहरण के लिए, दानिय्येल 8:9-11)। [17]यहूदियों के लिए सूअर एक अशुद्ध जानवर था (लैव्यव्यवस्था 11:3, 7)। [18]इसे असमोनी (या हसमोनी) काल भी कहा जाता है। [19]मूसा ने आदेश दिया था कि महायाजक हारून के वंश से हो (देखें निर्गमन 29:9; गिनती 25:10-13), जो आम तौर पर सबसे बड़ा बेटा होता था। स्पष्टतया, मूसा के निर्देश भुला दिए गए थे या उन्हें नज़रअन्दाज कर दिया गया था। [20]जहां तक तिथियों की बात है, हमारी दिलचस्पी पलिश्तीन देश से है।

[21]रोम ने 70 ईस्वी में यरूशलेम का विनाश किया था। उस समय, रोम पर तीन लोगों का शासन था, जिसमें पोम्पे और जूलियस कैसर भी थे। अन्ततः जूलियस कैसर ने कब्ज़ा कर लिया। [22]''मसीह के जीवन के समय पलिश्तीन'' का मानचित्र देखें। [23]''बाशान'' का उल्लेख पुराने नियम में तो कई बार आया है (यहोशू 22:7; 1 इतिहास 6:71; यशायाह 33:9), परन्तु नये नियम में नहीं। इतूरैया और त्रखोनीतिस के आस-पास का इलाका प्राचीन बाशान देश का ही था, इसलिए इस क्षेत्र को नब्शे पर प्रायः ''बाशान जिला'' के रूप में ही दिखाया जाता है। [24]''मसीह के जीवन के समय पलिश्तीन'' का मानचित्र देखें। [25]कैसर की आकृति वाले सिक्के होते थे (मत्ती 22:20), परन्तु यहूदी लोग रोम को अपना कर चुकाने के अलावा ''शापित सिक्कों'' को उपयोग में नहीं लाते थे। [26]''पलिश्तीन'' नाम फिलिस्तीनियों से लिया गया था। फिलिस्तीनी लोग कनान के दक्षिणी तट पर रहते थे (देखें सपन्याह 2:5)। मक्काबियों ने पलिश्तीनियों से युद्ध किया था, नये नियम में नाम से पलिश्तीनियों का उल्लेख नहीं है। कुछ लोगों का मानना है कि वे यहूदी जाति के साथ ही मिल गए थे। [27]पलिश्तीन के लिए KJV में पुराने नियम में, योएल 3:4 में ''Palestine'' एक ही बार आया है। NASB में इसका अनुवाद ''Philistia'' हुआ है। [28]जॉन डी. डेविस, ''Palestine,'' *ए डिक्शनरी ऑफ़ द बाइबल,* चौथा संस्क. (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1956), 562. [29]पलिश्तीन के क्षेत्रफल से उस इलाके के निकटता तुलना करें, जहां आप रहते हैं। इससे आपके सुनने वालों को पलिश्तीन के तुलनात्मक तौर पर छोटा होने की समझ आ जाएगी। यह आधुनिक फिजी, कुवैत, या स्वाज़िलैण्ड से थोड़ा बड़ा और बिलाइज़, एल सलवाडोर, या स्लोवेनिया से कुछ छोटा था। [30]इस पाठ में पहले की गई ''बाशान'' से सम्बन्धित टिप्पणी की समीक्षा करें।

[31]इस क्षेत्र में दस से अधिक नगर हैं, परन्तु स्पष्टतया उनमें से दस को प्रमुख माना जाता था। [32]रोमी सेना द्वारा 70 ईस्वी में विनाश किए जाने से कुछ समय पहले, 60 ईस्वी के अन्तिम दशक तक मन्दिर बनकर तैयार नहीं हुआ था। कुछ लोगों का विश्वास है कि उस समय भी निर्माण कार्य पूरा नहीं हुआ था। [33]''यहूदियों के पर्व'' चार्ट देखें। तुरहियों के पर्व और पूरीम के पर्व को छोड़कर नये नियम में इन सब पर्वों का उल्लेख है। अगली पुस्तकों में पर्वों पर चर्चा की जाएगी। [34]''सिनागोग'' उस भवन के बजाय, जिसमें वे इकट्ठे होते थे, वास्तव में सभा के लिए है (''सिनागोग'' के मूल अर्थ के लिए, ''मत्ती की पुस्तक'' नामक पाठ में टिप्पणी 21 देखें।) तो भी नये नियम में इस शब्द का इस्तेमाल कई बार लोगों के इकट्ठा होने की बिल्डिंग के लिए किया गया है (लूका 7:5)। [35]आराधनालयों और उनके प्रबन्धों और सेवाओं के बारे में हम अगली किताबों में बताएंगे। उदाहरण के लिए, उनके अगुओं को ''प्राचीन'' कहा जाता था। सुसमाचार के वृत्तांतों में कई बार आराधनालय के अगुओं के लिए ''पुरनिये'' शब्द इस्तेमाल हुआ है (लूका 7:3-5) और कई ज़ार अन्य धार्मिक अधिकारियों के लिए। [36]''रब्बी'' एक इब्रानी शब्द है, जिसका अर्थ है ''मेरा स्वामी।'' इसका अर्थ ''मेरा गुरु'' भी हो सकता है (देखें यूहन्ना 20:16; ''रब्बोनी'' ''रब्बी'' का ही रूप है)। सम्मान प्रकट करने के लिए यीशु के चेले उसे ''रब्बी'' कहते थे (मत्ती 26:25; मरकुस 9:5; यूहन्ना 3:2)। [37]ये व्याख्याएं

अन्ततः एक पुस्तक में एकत्र की गई थीं, जिसे *तालमुड* कहा जाता है। [38]देखें 2 शमूएल 8:17 (NASB में अनुवादित शज़्द ''सचिव'' ''शास्त्री'' के लिए ही है)। [39]व्यवस्था के शिक्षकों के लिए KJV में कभी-कभी ''डॉज्टर'' शज़्द का इस्तेमाल हुआ है। [40]नया नियम बताता है कि यूहन्ना को परमेश्वर की ओर से परमेश्वर का संदेश देकर भेजा गया था (यूहन्ना 1:6; लूका 3:2)। इसके अलावा, इसैनियों की शिक्षाओं और व्यवहार की यूहन्ना से तुलना करने पर कई भिन्नताओं का पता चलता है।

[41]यीशु ने अपने चेलों को बताया कि उसके जाने के बाद यह होगा (मज़ी 24:5, 23, 24)। बहुत से विद्वानों का मानना है कि यह उसके जन्म से पहले भी हुआ था। प्रेरितों 5:36, 37 से ऐसे दो पाखंडियों का पता चल सकता है।

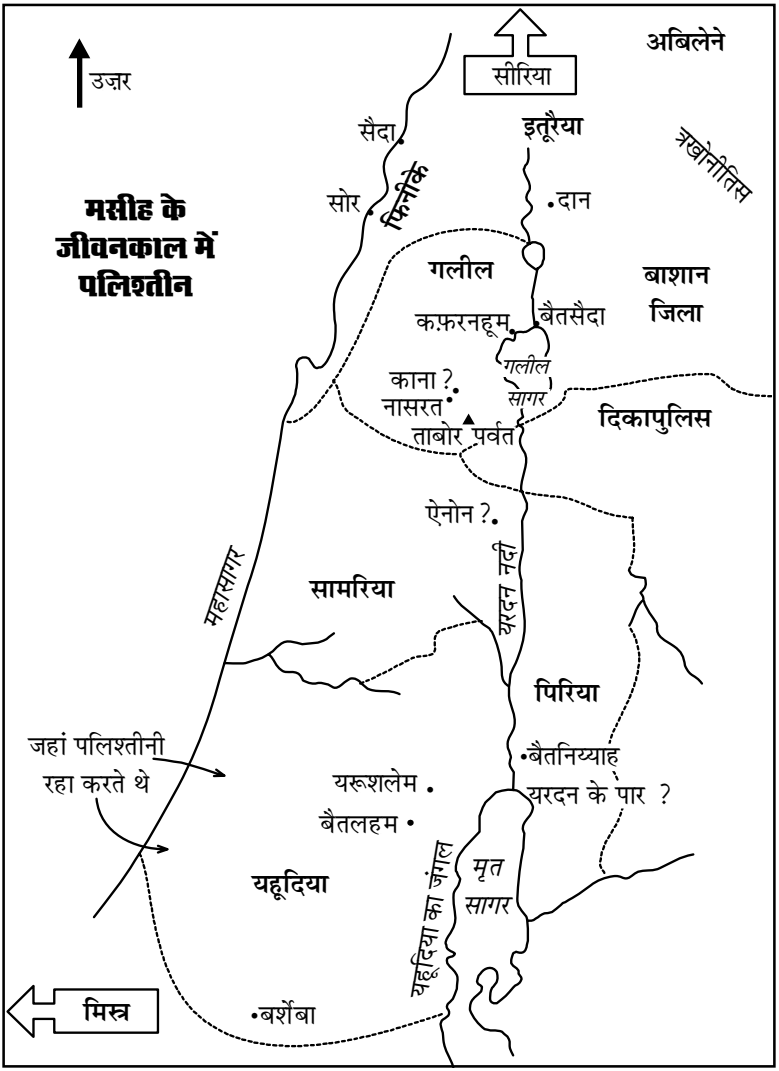

यहूदियों के पर्व[1]										
पर्व का नाम	इसका आरम्भ कैसे हुआ	किस महीने मनाया जाता था	पवित्र वर्ष का माह	सार्वजनिक वर्ष का माह	लगभग अंग्रेज़ी माह	पर्व का काल	कहां मनाया जाता था	इसे मनाये जाने की विशेषता	इससे ज्या संकेत मिलता था	अन्य नाम
फसह	बड़ा पर्व	नीसान या आबीब	पहला	सातवां	अप्रैल	1 सप्ताह	यरूशलेम	पसका का मेमना खाना	मृत्यु का ऊपर से गुज़रना और मिस्र से विदाई	अखमीरी रोटी
पिन्तेकुस्त	बड़ा पर्व	सीवान	तीसरा	नौवां	जून	1 दिन	यरूशलेम	गेहूं के पहले फल के रूप में, दो रोटियां भेंट करना	सीनै पर्वत पर व्यवस्था दिया जाना	अठवारों; पहले फल; गेहूं का पर्व
मण्डपों	बड़ा पर्व	तिसरी और एतानीम	सातवां	पहला	अज़्तूबर	1 सप्ताह	यरूशलेम	झोपड़ियों में रहना	जंगल में जीवन	इकट्ठ
तुरहियां	छोटा पर्व	तिसरी और एतानीम	सातवां	पहला	अज़्तूबर	1 दिन	कहीं भी	तुरहियां बजाना	नये वर्ष का दिन	
समर्पण	छोटा पर्व	चिसलु	नौवां	तीसरा	दिसज़्बर	8 दिन	कहीं भी	आनन्द करना, गाना, दीपक और मशालें जलाना	मूर्तिपूजकों से छुड़ाकर फिर से मन्दिर का समर्पण	प्रकाश
पूरीम	छोटा पर्व	अदार	तेरहवां	छठा	मार्च	2 दिन	कहीं भी	एस्तेर की पुस्तक पढ़ना	रानी एस्तेर का यहूदियों को बचाना	

[1]ओरिन रूट उ 1964 की *ट्रेनिंग फ़ॉर सर्विस* से पुन: मुद्रित किया गया। एलियनर डेनियल उ 1983 द्वारा, स्टैण्डर्ड पब्लिशिंग द्वारा दोहराया गया। अनुमति लेकर छापा गया।